वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

मार्च – 2018

* अद्वितीय भगवान की अद्वितीय दिनचर्या – 7
* मिशन की असीम कठिनाई
* मुझ अदना और तुच्छ पर महा उपकार
* मात – पिता संतान दिवस 2018
* माँ तो माँ होती है
* अंग्रेजी में एक नई शानदार पुस्तक
* शुभ संग्राम
* देव समाज के सम्बन्ध में विशेष सभा
* वक्त के सबसे पाबंद इंसान

अद्वितीय भगवान की अद्वितीय दिनचर्या – 7

भगवान के भीतर सफाई और सुन्दरता का देव भाव - भगवान के भीतर सौंदर्य्य और सफाई का विलक्षण बोध था। भगवान की दिनचर्या में हम लोग प्रतिदिन उसकी अभिव्यक्ति को देखा है। बेशक वह एक छोटे से कमरे में ही क्यों न रहे हों, वह जितना सम्भव होता पूर्ण रूप से साफ होता बल्कि उसकी सुरूचिपूर्ण ढंग से सजावट भी की होती। हर वस्तु को अपने ठिकाने पर रखा होता जो देखने में सुन्दर लगती। सन 1910 का वर्ष था मैं (कनल साहिब) भगवान के साथ फिरोज़पुर गया, जहां पर उस वर्ष महोत्सव रखा गया था। भगवान एक छोटे से कमरे में ठहरे हुए थे, मैं उस साधारण कमरे की सुन्दरता को देखकर हैरान हो गया। एक मेज पर बहुत सुन्दरता से फूल सजाए हुए थे। कमरे की सजावट आज तक मेरे दिल को प्रभावित कर रही है। एक बार भगवान ने अपने साधारण सेवकों को बताया "सफाई के लिए धन की आवश्यकता नहीं। यदि तुम अपने घर को कलई नहीं करवा सकते तो गोबर से लीप सकते हो। इसमें कुछ खर्च नहीं होगा। यदि तुम अपने घर को सजाना चाहते हैं, तो सस्ती चीजों से भी सजा सकते हो, परन्तु तुम्हारी रूचि होनी चाहिए।" उनके बहुत विपत्ति के दिनों, जो जन उनके प्रति बहुत घृणा प्रदर्शित करते थे, उन्होंने एक बार लिखा, "वह बिल्ली की तरह साफ सुथरे रहते है।" उनका अर्थ था कि वह साधू कैसे हो सकते हैं, जबकि इतने साफ सुथरे रहते हैं? भगवान के इस देव गुण को हर वह जो अचानक भी देवालय के सेहन में दाखिल होता था, नोटिस किए बिना नहीं रह सकता था। भगवान देवात्मा की शिक्षा थी कि कोई जन वा जाति अपने अच्छे बोधों को मारकर नहीं बल्कि अधिक से अधिक उच्च बाधों को रखकर ही ऊंची उठ सकती है। विकास शील जातियां सुन्दरता और सफाई के बोध रखती हैं। धर्म अच्छे बोधों के विरूद्ध नहीं बल्कि विकासशील सभ्यताओं के साथ इन बोधों से ही समन्वय रख सकती हैं। पूजनीय भगवान के अपने उदाहरण और नियम यह दोनों बोध सामाजिक जनों में धीरे धीरे विकास पाते गए।

भगवान अपनी प्रतिज्ञा के लिए सदा सच्चे रहे - महोत्सव के बाद मैं (श्री कनल जी) भगवान के सम्पर्क में आया, मुझे समझ आया कि मैं उन पर उतना ही दृढ़ विश्वास कर सकता हूँ, जितना नेचर के उच्चत्म नियमों पर। जब मैं खाना खाता हूँ, मैं नेचर में विश्वास रखता हूँ और पूरा विश्वास अनुभव करता हूँ, कि जो भोजन मैं थाली में डाल रहा हूँ, वह ज़हर नहीं बनेगा। इसी प्रकार जब भगवान कोई विश्वास दिलाते थे, तो वह काम पक्का हो जाना होता था। साधारण आदमी अपने प्रण से इधर उधर हो सकता है, परन्तु भगवान नहीं। एक दिन मैं भगवान के पास गया कुछ मसला सुलझाने के लिए। उन्होंने फरमाया, "इतने कठिन शब्द वा फिकरे इस्तेमाल न करो। मैं सादा आदमी हूँ। मैं अगर मगर को नहीं जानता, मुझे साफ साफ और स्पष्ट शब्दों में बताओ कि आप क्या चाहते हैं? एक बार जब मैं आपको जुबान दे देता हूं, तो फिर कभी पीछे नहीं हटता, इसके लिए चाहे कोई कीमत चुकानी पड़े। मैं खतरा मोल लेकर भी आपके साथ उस बात को निभाऊंगा।" मेरे भगवान ईंच ईंच सत्य के पोषक थे इसमें कोई अत्योशक्ति नहीं कि भगवान के इस अनोखे चरित्र ने मुझे बहुत प्रभावित किया और मैं सोच भी नहीं सकता कि वह कभी अपनी सत्य प्रतिज्ञा को कभी भंग कर सकते हैं।

धर्म जीवन

खण्ड 31 अंक 3
मार्च – 2018
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

मिशन की असीम कठिनाई

परम पूजनीय भगवान देव आत्मा का मिशन अतिशय महान् है, सर्वोत्तम है, परम हितकर है और यक्ता है। गुरू महाराज का मिशन योग्य मनुष्यों का नीच जीवन, पापी जीवन, दुराचारी जीवन, हानिकारक जीवन, अपने लिए और दूसरों के लिए दु:खदाई और विनाशकारी जीवन मिटाता है और उनके भीतर से पाप से झूठ उपजाऊ भीषण नीच सुख लालसाओं को मिटा कर, उच्च सात्विक, हितकर भाव शक्तियां पैदा करता है, और मनुष्यों को परस्पर सुखदायक भरोसेयोग्य और विकासकारी बनाता है। गुरू महाराज के मिशन का लक्ष्य मनुष्य जीवन का विनाश मिटाना और विकास करना है।

गुरू महाराज अपने मिशन के बारे में इस प्रकार ब्यां करते हैं, "मैं दुनिया को खुश करने हेतु नहीं आया, अपितु मैं तो इस लिए आया हूँ कि अधिकारी आत्माओं को, उनकी बुराईयां और पाप – मूलक गतियों, बुरे विचारों नावाजब बंधनों, और झूठे विश्वासों से मुक्त करूं, और उनके हृदयों में सात्विक शक्तियों को जागृत और विकसित करूं, ताकि वह नेक इन्सान बन जाऐं।"

आगे फिर गुरू महाराज ने कहा है: –

"पिशाचत के नाश और देवत्व के विकास में मैं इस प्रकार का दृश्य देखता हूं कि जिसमें मनुष्य आत्मा एक दूसरे के लिए आकर्षणीय, हितकर, वफ़ादार एवं भरोसेमंद सिद्ध हों। ऐसे दिन को लाना, ऐसे आत्माओं का पैदा करना, और ऐसे आत्माओं के खमीर के द्वारा, इस देश को उभारना और उसकी अनन्त बरकतों को दुनिया के अन्य विभागों में पहुंचाना, मैं अपने विशेष जीवन का विशेष लक्ष्य (मिशन) समझता हूं। मैं इस पृथ्वी पर स्वर्ग चाहता हूं, जो इस दुनिया में सभी प्रकार के पापों और बुराईयों का नाश करता हो जो इस दुनिया के अन्दर ऐसे सच्चे भरोसे के योग्य संबंधी पैदा करता हो कि जिनके उत्पन्न होने से, मनुष्य जीवन सभी प्रकार मीठा और सुखदायी बन सकता है.....।" गुरू महाराज का पाक मिशन मनुष्य मूल प्रकृति से सरासर उलटा है, जो मनुष्य चाहता और करता है, एवं करने हेतु मजबूर है, उसको हटाना, एवं जो मनुष्य नहीं चाहता और जिस से दूर – दूर भागता है, उसको उसके जीवन में लाना है।

यद्यपि हर जीवनधारी की तरह मनुष्य के अन्दर दो मूल इच्छाएं हैं, सुखी रहना और अतिशय (अत्याधिक) जिन्दा रहना। अपितु केवल चाहना या

इच्छा करना, मनुष्य को न सुखी बना सकता है एवं न ही जिन्दा रहने के योग्य बना सकता है। इसलिए सच्चे सुख प्राप्ति के नेचर के नियमों को जानना और पूरा करना अत्यन्त आवश्यकता है। इसी प्रकार जीने के या जीवन के नियमों को जानना ओर पूरा करना अत्यन्त आवश्यक है। केवल इच्छा रखना निरर्थक है।

इस सच्चाई के बारे में गुरू महाराज ने कहा है:- किसी का जीवित रहना या न रहना, उसकी इच्छा पर नहीं अपितु प्रकृति के अटल नियमों पर निर्भर करता है। इस लिए केवल जीने की इच्छा रख कर ही कोई मनुष्य अपने आत्मा को विनाश से नहीं बचा सकता। बल्कि उसके निमित्त नेचर ने जो ठीक और अटल मार्ग रखा है, उसी के सत् ज्ञान और उसको ग्रहण करने की योग्यता प्राप्त करके ही वह अपने वजूद की रक्षा कर सकता है।"

गुरू महाराज का मिशन मनुष्य प्रकृति के कितना भिन्न और उलट है। इसको दर्शन हेतु मैं अपने ऊपर बीती एक घटना ब्यां करना चाहता हूं, जो इस प्रकार है।

मैं बीते कुछ साल से कैनेडा में अपने इस संबंधी के पास गया हुआ था। मेरी होस्ट एक बहुत योग्य महिला थी, जो अपने काम-काज में बहुत निपुण, सफल और प्रसिद्ध थी। वह हमारी मेहमानवाजी में कोई भी कसर नहीं छोड़ रही थी। हर रोज़ उसके सर्कल की कई और दूसरी महिलाएं खाने के समय आकर खाने को ज्यादा से ज्यादा उत्तम और स्वादिष्ट बनाने में सहायक होती और अपना योगदान देती थी। उनको जब यह पता चला कि मैं न नमक और न मिर्च खाता हूं, न चाय काफी पीता हूं न घी और मिठाईयां खाता हूं, तब उनमें से एक बहुत ही हमदर्द एवं योग्य शिक्षित महिला ने हमारी होसट को बड़े दुख और बड़े दर्द से पूछा कि इन्होंने नमक मिर्च तक क्यों छोड़ दिया है। हमारी होस्ट ने उनको बताया कि उनके धर्म देव समाज के अन्दर, नमक मिर्च को हितकर और उचित नहीं समझा जाता तो उसने बहुत ही सदमें और दुःख से बेबस होकर कहा कि इतने अच्छे इन्सान हैं, इनकी तो इनके धर्म ने जिन्दगी ही बर्बाद कर डाली है। यह है अच्छे वर्ग के सभ्य मनुष्यों की सोच।

जबकि दूसरी ओर गुरू महाराज का बेशकीमती यह बचन है कि "हे मनुष्य तूं केवल शरीर नहीं तूं आत्मा है। केवल शारीरिक सुखों की तृप्ति में तूं अपनी आयु बर्बाद न कर।"

मनुष्य प्रकृति सुखों में लीन और सुखों में ही आश्रय पाती है और सर्वदा ऐसा ही रहना चाहती है। हमेशा ही सुख प्राप्ति हेतु बेबस इच्छा करती है। वे सुख चाहे शारीरिक स्वादों का या खाने-पीने का या वासना भोगने का हो, बेशक मान-सम्मान, पद प्रभुत्त्व का हो, चाहे प्रशंसा वाह-वाह का हो, चाहे धन, धरती पदार्थों की प्राप्ति का हो, चाहे मोह पति पत्नी एवं संतान का हो, चाहे अपने धर्म-विश्वासों का हो, मनुष्य प्रकृति सदा जोरदार चुंबक की तरह, उस सुख की तरफ अग्रसर होती एवं जाती है और सुख को बेबस प्यार करती है। जैसे पानी नीचे की ओर (नीचे स्थान की तरफ) बहता है, चीलें, गिद्दों मुरदार को पड़ती हैं। उसी प्रकार मनुष्य सुखों को, हां अदना से अदना सुखों को चाहता और प्यार करता है। "सभी दुःखों और रोगों की जड़ इन्सान की सुख अनुरागी प्रकृति है।" देव आत्मा ने कहा है-सारी बुराईयों, सारे पाप, सारे दुःख

और विनाश, सारे झूठ मिथ्या और कपट, नीच सुख अनुरागों से पैदा होते हैं। जैसे पैट्रोल भड़कने से जलने के लिए हैं, वैसे ही मनुष्य प्रकृति पापी और झूठी होने के लिए बेबस है, और दुःखों, मुसीबतों, झगड़ों के नरक को पैदा करने हेतु है।

मनुष्य सुख और शुभ के अन्तर को नहीं देखता। शुभ में आखिरकार सदैव सुख मिलता है, सुख अन्दर शुभ नहीं मिलता। सेहत अन्दर सुख है, बीमारी के अन्दर सुख नहीं।

मनुष्य की सुख अनुरागी प्रकृति के लिए क्या लीला प्रगट करना जरूरी है, उस संबंधी गुरू महाराज ने यह रोशनी दी है, जिससे सारा मनुष्य - मात्र अभी तक अनभिज्ञ है, पूरे अन्धकार में है।

"नीच रूचियों ओर सुखों की गुलामी में रहकर, हर एक मनुष्य के लिए पाप अशुभ की ओर अग्रसर होना लाजमी और आवश्यक है। और जो जितनी ज्यादा अतिघोर दुष्ट, प्रकृति लेकर जन्मा हो, उसके लिए उतना बढ़चढ़ कर अशुभ पैदा करना लाजमी एवं जरूरी है। इसलिऐ ऐसे जन चाहे किसी भी मत को मानते हों और कितने ही ईश्वर और उसकी रची हुई पुस्तकों के विश्वासी होने की हामी भरते हों, वे अति - घोर दुष्ट प्रकृति और अशुभ पाप की गति से पीछा नहीं छुड़ा सकते और अन्य दूसरे संबंधों में अपना ओर दूसरों का अशुभ साधन करने के बिना नहीं रह सकते।"

मनुष्य पाप, अपराध, हानि, तबाही, फसाद, मारपीट और झूठ का नर्क पैदा करने के लिए बेबस और लाचार है, देवात्मा पाप मिटाने और शुभ लाने के लिऐ बेबस हैं, झूठ मिथ्या को कुचलने के लिए और सच के स्थापन हेतु कटीबद्ध और लाचार है। समस्त संसार पाप और मिथ्या के सुख की चाह में सरपट भाग रहा है, देव - आत्मा वहां पर सच और शुभ वा शान्ति मिठास मेल और एकता का स्वर्ग पैदा करने के लिए, रोम रोम कुर्बान करने के लिऐ बेचैन और बेबस हैं। विरोधी प्रकृतियों का गहरा एहसास परम् पूजनीय भगवान के मिशन की असीम कठिनाई का विचारवान जनों को कुछ बोध हो सकता है। मनुष्य की नीच सुख अनुरागी प्रकृति क्या - क्या कर सकती है। यहां पर कुछ एक मनुष्य जीवन की सच्ची घटनाएं पेश करते हैं।

गाजियाबाद के नजदीक निथारी गावं में 5 - 7 साल पहले एक हृदय कंबाने वाला कांड हुआ था, जिसमें एक नौकर ने अपने मालिक से मिलकर 27 मासूम छोटे बच्चों की, जिनकी आयु 5,7 साल से लेकर 12 - 13 साल की होगी, निर्मम हत्या कर दी थी। बच्चों को चीर फाड़ कर उनका मांस खाता था, खाता गया, उनके साथ बलात्कार किए गए। उनकी हड्डियां पास ही नाले में फेंकी पाई गई। उस नौकर को फांसी की सज़ा सुनाई जा चुकी है, बाद में मालिक को भी जो बहुत बड़ी हैसियत का मालिक बताया जाता है, यह सज़ा दिए जाने का हुक्म हो गया है। कैसे 27 परिवारों का सुख चैन सदा सदा के लिए बिना उनके किसी दोष से लूट लिया और नर्क पैदा कर दिया।

काम वासना का सुख कैसे मनुष्य को पागल कर देता है, हर रोज़ बलात्कारों के साथ कत्ल के, वह भी 2 - 3 साल और 5 - 7 साल तक की बच्चियों के, केसों से नित्य के अखबार भरे होते हैं। पिताओं द्वारा 12 - 13 साल की अपनी ही पुत्रियां सुरक्षित नहीं, पुत्रियों और माताएं कचहरी में बे - बस बिना कसूर के

जुल्मों सितमों को सहने और धक्के खाने को मजबूर हैं।

नव - विवाहित पुत्रियों से बेवफाईयों की घटनाओं की हर समय सुर्खियां बनी रहती हैं। कोई नेता अपनी सुन्दर पत्नी को मार कर बोरे में डालकर ढाबे के सुरख तेज तंदूर में टांगें, बाहें फेंकता पकड़ा जाता है, कोई राष्ट्रपति का जैन डाक्टर जैनी होके भी अपनी नर्स के साथ रंग रलियों को मनाने का सुख प्राप्त करने के लिए, बदमाशों से अपने ही बच्चों की मां, निर्दोश, मासूम, वफ़ा की पुतली को कतल करवाता है ओर अपनी ही कोठी के बगीचे में दफना देता है।

लाखों की गिनती में भक्त रखने वाले, बड़े नामी डेरों आश्रम के साधू संतों, जिन्होंने बेशुमार बलात्कार किए हैं, मासूम पराई पुत्रियों का घात किया है, वह जेलों में आए दिन एक के बाद दूसरे, और दूसरे बाद तीसरे कैद किए जा रहे हैं, और दूसरे आश्रमों की पड़तालें मजबूरन सरकारों को करनी पड़ रहीं हैं।

एक M.L.A. की पुत्री ने, भीतजे के जन्मदिन पर आकर, उस रात अपने माता - पिता, भाई - भाभी, और अन्य बच्चों समेत, पिता की समस्त बड़ी जायदाद की मालिक होने हेतु 8 जिन्दगियों को रेत में मिला दिया था और खुद पति समेत लगी फांसी की सज़ा की अपीलें कर रही है।

धन - प्राप्ति हेतु कई कई हजार करोड़ों के मालिक सगे भाई, एक फार्महाऊस को एक - दूसरे से छीनने के झगड़े में दोनों इकट्ठे कत्ल हो गऐ।

एक भाई की धन की हवस ने अपने सगे सरकारी वज़ीर भाई को अपने रिवाल्वर से रेत में मिला दिया, और दो सालों बाद जेल में अपने ही डिप्रैश्न में मर गया।

एक राज्य के इकलौते राजकुमार ने अपनी पसंद की साधारण सी लड़की से विवाह करवाने की इच्छा से एक शाम, दर्जन से भी अधिक माता - पिता बहन - बहनोईयों और अन्य सगे संबंधियों समेत दर्जन से भी अधिक राजघराने के राजकुमारों को मार दिया और साथ ही आप भी मर गया। मुलक के राज्य को लावारिस कर गया था।

नशे सुख की महामारी कैसे कैसे नौजवानों को, हर रोज़ भारी गिनती में डायन की तरह खाई जा रही है, घरों के घर लूटे जा रहे हैं, (घरों के घर खाली किए जा रही हैं) जवान पत्नियां और यतीम बच्चों की कुरलाहट घर - घर, स्थान - 2 सुनाई दे रही है। कई आप ही पत्नियों को जो रोकने का यत्न करती हैं, कत्ल करके जेल में रहे हैं। बिना किसी विश्वयुद्ध के आगमन से ही, नीच - सुखों की तृप्ति हेतु, अनगिणत योग्य, महान, विज्ञानी, लेखक, एक्टर, खिलाड़ी, वज़ीर, मुख्यमन्त्री, गवर्नर बे - आई मौत मर - मिट जा रहे हैं। अपने ही धर्म - विश्वासों के ख़ब्त ने लाखों नौजवानों को आतंकवाद के पथ पर अग्रसर कर दिया है, जिसका शिकार समस्त देश हुए जा रहे हैं।

बेकसूर मासूम जानें, स्कूलों में बाज़ारों में मस्जिदों में मन्दिरों गिरजों में हर रोज़ मौत के घाट उतारी जा रही हैं। आए रोज़ आतंकवादी आप भी या खुद बंबों को जिस्मों से बांध कर, या गोलियों का शिकार हो कर बिन आई मौत हर रोज़ मर रहे हैं।

नीच - सुख लालसाएं, जिनकी लीला का परिपूर्ण चित्रण करना करीब - करीब असंभव है, महान् तूफ़ान, सुनामी, और भूकंपों का रूप धार रही है। सदियों से बड़े

बड़े पुराने मज़हब धर्म चुप - चाप यह तमाशा देखते रहे हैं। और कोई भी नतीजा निकालने या हल करने से असमर्थ हैं, यह पाप और झूठ की विनाश लीला जंगलों की आग की भान्ति, सदियों से बढ़ती चली आ रही है। किसी भी धर्म या मज़हब का लक्ष्य यह नहीं है कि मनुष्य जीवन में से मिथ्या, नीचता एवं पाप का नाश किया जाए, यह बहुत करके, अर्शी काल्पिनक स्वर्गों को, और देवताओं, देवियों को मिलाने या प्राप्ति का ही लक्ष्य रखते हैं। असल में तीखी अति दु:खदायी सच्चाई यह है कि देव - आत्मा से पहले सुख - अनुराग से अति, पूरन नेह कलंक कोई गुरू, पीर, पैगंबर, दिगंबर, देवी - देवता नहीं हुआ जो पूर्णत: पापों का, झूठ का नाश करने की सामर्थ्य रखता हो। कई अति महान् सात्विकता के चंद्रमा तो थे, दिशाशील तो थे, आम मनुष्य से बहुत ऊंचे भी थे। जब - तक देव - आत्मा का कार्य बहुत विशालतम् स्तर तक नहीं फैलता, बढ़ते जाने के लिऐ ही है नेचर के विकास के महाविचित्र एवं आलौकिक नियम, जो र्स्वदा करिश्मों को उत्पन्न करता है, उसने देव - आत्मा की, मनोवैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक विलक्षण रूपरेखा का विकास करके, यह और अति अद्भुत करिश्मा पैदा कर दिया। इस करिश्मे को जानने, पहचानने चिन्तन - मनन् करने में नेचर ने अपना समय लगाया है।

देव - आत्मा के सत् और शुभ की अतिशय महान अनुरागों ने बलशाली होकर उनको एक ओर पाप और झूठ को कुचलने हेतु पूर्ण सामर्थ्य अपर्ण कर दी, और दूसरी ओर उनको सत, शुभ, सुन्दर का महान लक्ष्य धारण करने के लिए और अपने आप को तिल - तिल करके बेवस हो कर कुरबान करने हेतु मजबूर कर दिया।

देव - आत्मा ने अर्ज़ किया है कि हिमालय पर्वत को हिलाना बहुत मुश्किल है, पर नीच सुख अनुरागों के वशीभूत, घोर गुलामों एवं कैदियों को हिलाना और बदलना और भी अधिक कठिन है। इसलिए इतने कठिन और आजतक असंभव रहे महा कठिन कार्य में सफलता का श्रेय, मानवता के सरताज देव आत्मा को ही प्राप्त हुआ है।

देव - आत्मा के अद्वितीय देव जीवन, सत् - शुभ के पूर्ण अनुरागों का व्यक्तित्व या ज्योति मुक्ट ऐसा महांशक्तिशाली था कि जो कोमल, श्रद्धापूर्ण हृदय उसकी लहरों को प्राप्त करता था, वह आपका बेइन्तहा गुलाम होकर रह जाता था और आपकी शरण से दूर अपनी सुरक्षा किंचित मात्र भी नहीं देखता था।

श्रद्धा के योग्य भाई अमर सिंह जी को विद्यार्थी जीवन में 18 - 19 साल की आयु में उस व्यक्तित्व की कुछ किरणें नसीब हुई वह यह पुकार मचाने हेतु बेबस हुए कि "मैं अब अपने आप के और हलाक पापी जीवन द्वारा नहीं करूंगा। वह सभी प्रकार की दुनियापरस्ती को तिलांजली देकर सदा - सदा के लिऐ गुरू के हो गए। उन्होंने पुकारा था, "आया सन् चौरासी, झंडा सिंह हुआ सन्यासी।" उन्होंने आख़री सांस तक देव - धर्म का इतिहास रचा। गुरू महाराज फरमाया करते थे कि भाई अमर सिंह जी को मेरे से दुनिया की कोई ताकत नहीं छीन सकती।

स्वामी गोविंद राम जी, जो राज पुरोहित घराने के सदस्य थे, जो काम अनुराग ने बेतहाशा पागल हो है थे। जो गन्दी नज़र में, गन्दे कर्मों के भयानक हद तक गुलाग हो चुके थे, उनको लाहौर में, गुरू महाराज

का कथन वा उपदेश सुनने का अवसर मिला, वह न चाहते हुए भी सदा के लिए पवित्र हो गए, और सदा के लिऐ सरकारी नौकरी को त्याग गुरू कार्य के हो गए। वह अपना मुँह काला करके सारे-बाज़ार, अपनी बस्ती के बाज़ार में बैठने के लिऐ बेबस हो गए थे।

सदा-सदा के लिए क्या आप और क्या उनकी इकलौती पुत्री गुरू मिशन के होकर रह गए।

देव-आत्मा का उपदेश सुनकर बिहार के नौजवान बाबू राम बिहारी जी जिनको अपना धन अनुरागी, रिश्वतखोर, इतना खून पीने वाला रूप दिखाई दिया कि वह अपना बेईमानी की कमाई से रहने वाला महल-नुमा भवन त्यागने हेतु और गुरू चरणों में डेरा लाने हेतु बेबस हो गए। स: अनोख़ सिंह जी 40 साल की आयु में अफीम के नशे द्वारा निगले गये थे, डाक्टरों ने 6 महीने और जिन्दगी रह गई बता दी थी, उनको चंद मिनट लाहौर देव-आत्मा के वचन उनके मुख से सुनने का महां सौभाग्य मिल गया, उन्होंने वापसी में दरिया में अफ़ीम की डिब्बी फैंक दी, घोर जांकन्दनी से घोल करने की शक्ति पाकर सदा-सदा के लिऐ नशा-मुक्त हो गए। 80 साल से अधिक आयु तक पर-सेवा का कार्य करते देव-आत्मा की महिमा महान् करते मरे।

देव-आत्मा के बाद भी उनकी खास सेविका द्वारा यही कार्य होता रहा है। पंडित नेत राम जी जो अतिशय, अत्यधिक बद-चलन, कामी, बदमाश, शराबी, हुकेड़ी, भंगेड़ी, जूएबाज़ बन चुके थे, जिन्होंने 40 एकड़ ज़मीन बुरे व्यसनों में बेच खाई थी, शराब का ठेका ले लिया था, उनको देव आत्मा की पैदा करता अनोखी संगत मिल गई, जिसने उनके जीवन की काया पलट दी। उनको ऋृषिरूप दे दिया जिन्होंने अपने एक भजन में स्वयं कहा है कि, "काम-अनुराग था सिर असवार, जिस मत्त बुद्ध कर छोड़ी थी मार, होता फिरता था नित्त खुवार, जा कंजरों के डेरे मैं, और पाता दु:ख घनेरे मैं।"

इस प्रकार बहुत सम्मान के योग्य, श्रीमान् नौध सिंह जी, श्रीमान् मक्खन सिंह जी, श्रीमान् रूप चंद जी, श्रीमान कंवर दविन्द्र सिंह जी लुख्वी आदि जनों के भगवान के कार्य द्वारा परिवर्तित जीवन, भगवान् के कार्य की कठिनता के जीवन्त सबूत हैं।

न तो नेचर की महां-विशालता की कोई हद होती है, न देव-आत्मा के देव-जीवन की महानता, कोई सुख अनुरागी मनुष्य कभी पहचान सकता है। ऐसे महां-कठिन कार्य के कर्ता की, जो हज़ारों, मनुष्य जीवनों पर हुआ है, और आगे हो रहा है, की असीम महिमा को हम कुछ सच्चे हृदय से महसूस कर सकें, और उनकी चरण-धूलि ऊपर माथा टेकने का सदा सौभाग्य प्राप्त करते रह सकें और उनके असीम कठिन कार्य में सदा-सदा कुछ न कुछ अर्पित होते रह सकें।

(बलदेव सिंह)

उच्च संगत का दान – 2

मुझ अदना और तुच्छ पर महा उपकार

(पिछले अंक से आगे)

श्रद्धेय श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी:- मैं महा घमंडी, अनघढ़ नौजवान था। अपने अंह का शिकार होकर कई बार उनके सामने सिर उठाने और बोलने, सवाल जवाब करने और टोकने, बोल कबोल करने को बेबस, अति घिनौना गुनाह कर बैठता, परन्तु ऐसा कभी भी नहीं हुआ कि मैंने जब जब अपने अंह के सींग उन्हें मारे हों, तो उस समय उनका गुरू सेवा का फरिश्तों जैसा रूप दिखाई देकर झटपट उनके चरणों में उसी क्षण सिर न रखा हो और अपने भीतर की अंह जनित गुस्ताख़ी पर रोना न आया हो, और मैं दुख से शर्मसार न हुआ हूं। ऐसे समय में वह मेरे सारे गुनाह बख़्श कर यह फरमाकर आशीष दिया करते थे कि "तेरा अवश्य कुछ बन सकता है।"

उनकी सैंकडे बहुत ही प्रभावशाली सभाएं सुनी हैं, जिन्होंने मुझे घड़ने का काम किया है इस उपकार का बदला मैं कभी भी चुका नहीं सकता। वह जब अपनी एक सोच को याद करके, गुरू महाराज को यह कहकर "कि महाराज मेरा बाहर जाकर प्रचार करने को दिल करता है" वह एक दिन गुरू महाराज की आज्ञा लेकर, उन्हें छोड़कर प्रचार करने की सलाह बनाकर लहौर से आ गए, परन्तु गुरू की जुदाई से और ही प्रकार का वातावरण पाकर अगले दिन ही वापिस आ गए, फिर गुरू चरणों में जाकर ही तृप्ति पाई। इतनी सी एक दिन को बेवफाई की सूक्ष्म क्रिया को स्मरण करके, वह बिलक बिलक कर रोने के लिए बेबस हो जाते और देर तक बन्द नहीं होते थे। उस समय जो वातावरण बनता था, उसकी याद ही उनकी चरण धूल में नमन करने के लिए मजबूर कर रही है। आपकी सभाएं बहुत ही प्रभाव दायक होती थी। वह पापी और नीच हृदयों को हिलाकर रख देती थी। एक घटना जो मैंने स्वंय अपनी आंखों से देखी उसे दर्ज करता हूं, जिस में मुझे स्वयं बैठने और सुनने का सुअवसर मिला।

आपकी मोगा विकासालय में ज़ोरदार सभा चल रही थी। मैं आपके सामने पहली कतार में बैठा था। मेरे पीछे बैठे एक अधेड़ उमर के जन को अपनी नीचता पर दुख हो रहा था। उसने बेबस होकर सभापति जी को अपनी नीचता प्रगट करने के लिए एक चिट लिखकर दी। और मुझे आगे पकड़ाने के लिए दी। उसे पढ़कर मैं हिल गया और मैंने आगे श्रीमान जी को पकड़ा दी। मैं गुरू महाराज को और सभापति जी को सजदे करने लगा गया, कि गुरू के प्रभाव किस प्रकार हम नीचों का प्रकृत रूप रोशन कर देते हैं। साथ ही उस सौभाग्यवान जन के आगे भी झुकता रहा जो ऐसे प्रभावों को पाने का अधिकारी बना। उस चिट पर लिखा था, मुझे ये याद करके दुख हो रहा है कि मैं कामी, नीच अपनी छोटी भावजा की ओर गन्दे तरीके से हाथ मारता

था, वह स्वभाविक ही सहयोग नहीं देती थी। निराश होकर मैं उसके झूठे दोष बता बताकर भाई से उसे मरवाता था। ऐसी स्वयं का प्रकृत रूप दिखाने वाली सभाएं होती थी। आपकी ऐसी सभाओं ने मुझे भी संवारने का बेहद काम किया है।

हक़ीकत यह है श्रीमान जी के भगवान देवात्मा के चरणों में वास ने, अंह बहुत कुछ नष्ट कर दिया था, जिसके कारण वह भगवान की सच्ची पूजा करने के योग्य हो गए थे। उनका देवरूप के साथ सच्चा सम्बन्ध बन चुका था, और उनकी महा दुर्लभ और अतिशय महान और अमूल्य देव ज्योति तक रसाई हो जाती थी, तभी उनकी सभाएं नीच हृदयों को परिवर्तित करने की समर्थ्य रखती थी। वह एक आख़िरी फरिश्ता कर्मचारी या प्रचारक थे, जो श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज की तरह, जिनके भीतर भी किसी अंश में नीच जीवनों में परिवर्तन लाने की कला वा योग्यता वर्तमान थी, जो आज तक लगभग लोप हो चुकी है। आपने भगवान के अद्वितीय आर्विभाव को पहुँचाकर पाप के बड़े बड़े किले फतह किए थे, जो उनके बाद कोई भी माई का लाल नहीं कर सका। आपने उच्च लोक वासी, श्रीमान नौध सिंह जी को बदलकर ऋषि रूप दे दिया। आपने श्रीमान नौध सिंह जी की पत्नी के भाई आबकारी सुपरिडैंट श्रीमान मक्खन सिंह जी को बदला। उनके आगे दर्जनों परिवार बदले। आपने सरदार अमरीक सिंह जी जिन्होंने 25 खून कबूल किए, उनके जीवन को बदला। फिरोज़पुर में कितने ही जीवनों को बदला। प्रचार विभाग में आपका बहुत योगदान है। फिरोज़पुर के एक धर्म समाज के प्रधान, जो छुप छुपकर आपकी सभा में आते थे, आखिर अपनी नीचता देख देखकर रोने कुरलाने के लिए मजबूर हो गए। श्रीमान जी को रो रोकर बताया कि मैं बाज़ारी औरतों के पास जा जाकर बर्बाद होता हूं, हो चुका हूं, कई भयानक रोग लग गए हैं, मेरा जवान पुत्र की भी यही हालत है। धन्य हैं ऐसे प्रचारक!

आपके भीतर नीच घृणा वा ईर्षा नहीं थी। आत्मिक हमदर्दी बहुत थी। एक पापी जब अपने पाप देखकर रोता था, तो आप उससे चिपट जाते, हमदर्दी से भरकर रोने लग जाते। स्नेह से भरकर उसे गले लगा लेते। उसको बचाने के लिए संग्रामशील हो जाते। मैं उनसे 22 - 25 वर्ष छोटा था, बार बार कहते कि तेरा इस दर की ओर मुख हो गया, बहुत अच्छा हुआ। सदा ही मुझे अपना समझते। मेरी उलझने सुलझाने में स्वयं बहुत संग्राम करते।

मैं उनके साथ, अपने स्वभाव से बेबस होकर झगड़ने या बहस करने लग जाता, उन्हें कड़वा बोलने लग जाता, चुभन भरे शब्द भी बोल जाता, वह मेरे नीच जीवन से पूरे वाकिफ थे, परन्तु उन्होंने कभी कोई मेरी नीचता को इशारे मात्र में भी प्रगट नहीं किया, वह नीच जनों से हमदर्दी से भरकर उन्हें उभारने का यत्न करते। उसे बचने में सहयोग देते। किसी की नीचता देखकर तिरस्कारते नहीं थे। एक बार मेरे धर्म मार्ग में बड़ा संकट आया था। कौंसल ने बड़े बड़े पदों से उतारकर करके गुझे सेवकी से खारिज़ कर दिया था। वह मेरे लिए बड़ा संकट का समय था। उस समय और उच्च आत्माओं की तरह मुझे रता भर भी हक़ारत से नहीं देखा,

गहरी हमदर्दी से मेरा सहारा बने। ऐसा उपकार कोई सच्चा उच्च जीवन धारी ही कर सकता है, थोथे ओर हमदर्दी रहित जन कभी हमदर्दी की महान दौलत नहीं बांट सकते।

श्रीमान जी का लक्ष्य कभी भी गुरू चरणों में वास करने के कारण कभी राजनीति, पद प्रभुत्व पैसा आदि नहीं बना। गुरू की कृपा से उनके जीवन का लक्ष्य सदा नीच जीवन से मुक्त होना, उच्च जीवन की प्राप्ति रहा है। उन्होंने कभी कोई अलग गठजोड़ या पक्षपात को लेकर कोई ग्रुप नहीं बनाया। वह हर जीवन अभिलाषी के अपने थे। प्रत्येक की कदर और स्नेह से भरकर सहायता के लिए तत्पर रहते थे। देव समाज प्रबन्धक कौंसल के 5 मैंम्बरों में वह और उनके छोटे भाई हमेशा मैंबर रहे। यह कभी महसूस नहीं हुआ कि वह दोनों भाई मिलकर किसी विशेष मन पसन्द फैसले के लिए खींचतान करते हों, जबकि वह अपने पारिवारिक जनों, विशेषकर बहन भाईयों के प्रति हृदय में बहुत ही स्थान और प्यार रखते थे। महाराज की रोशनी और महाराज की शुभ इच्छा के लिए, गुरू कृपा से बड़ा सत्कार रखते थे, उसकी उलन्घना को जीवन घाती देखते थे। ऐसी उच्च आत्माओं और उनकी संगत बहुत दुर्लभ वस्तु है। मैं जब भी उनके गांव कुहारवाले गया हूं, उनके पैतृक घर को एक तीर्थ समझ कर गया हूं और मुख्य द्वार पर पहले उसकी पाक मिट्टी पर सिर रखकर सजदा करके ही फिर आगे जाता हूं।

उन्होंने गुरू महाराज की निजी सेवा का बहुत बड़ा और महान सौभाग्य प्राप्त किया और गुरू की घोड़ा - गाड़ी की भी लम्बे समय तक कोचवानी का सौभाग्य प्राप्त किया। इस सेवा में सदा गुरू की सुरक्षा का विशेष ध्यान रखा और अपनी जान तक की भी कोई परवाह नहीं की। ऐसे जान निस्सार गुरू भक्त कहां मिलते हैं, जिन्होंने ऐसी सेवा के द्वारा महाराज की सच्ची सत्तुष्टी वा खुशी प्राप्त की और महाराज की शुभ आशीष का सर्टीफिकेट का नसीब पाया। भगवान ने उस समय फरमाया था कि "हमें खुशी और तृप्ति मिली है, कि कोई तो है, जिन्हें हमारा कुछ फिक़र है।" ऐसे फरिश्ते अब कहां?

मुझे अपने सौभाग्य पर नाज़ होता है, हृदय उच्च सरूर से भर जाता है कि जब मैं देखता हूं, कि मुझे उक्त हस्तियों को आखों से देखने का, उनकी छत्रछाया में प्रतिपालित होने का, समय समय पर उनके साथ गुरू मिशन में विचरने का और उनकी हिदायतों के अनुसार सेवा करने का सौभाग्य शाली सुनहरा अवसर मिलता रहा है। बड़ा दुख यह है, कि उनकी कोई कदर न पाई, कदर तब जागी जब वह अचानक क्षणों में ही, कभी वापिस न आने के लिए उडारी मार गए। मैं बदकिस्मत देखता ही रह गया, ऐसे फरिश्ता की दिल भरकर रता भर भी सेवा करने का अमृत रस प्राप्त न कर सका। हम बेकदरों से उनकी कोई कदर ही न पड़ी। सही अर्थों में न मैंने और न ही किसी और ने गुरू की और न मिशन की कदर की। दुख इस बात का है कि पछतावा ही रह गया।

दो जनों के बिछड़ जाने से, मेरा दिल जख़मी हो गया। एक 1969 में मेरी जन्म दाता माता का और दूसरे श्रद्धेय श्रीमान जी का सदा के लिए

बिछड़ना था। मुझे जब श्रीमान जी के अपने घर में हादसे के शिकार होने का पता लगा तो मैं अपने फार्म में था। अनाज निकल रहा था। मैं एक दम सब कुछ बीच में छोड़कर उस समय मोगे की तरफ चल पड़ा। मेरा दिल गहरे दुख से भरा हुआ था। गुरू मिशन का रहता इकलौका सरदार, मुझे क्या सारे मिशन को यतीम कर गया था।

मैं दो वर्ष तक गहरे डिप्रैशन में रहा। यह नये बछड़े गुरू मिशन की पंजाली कैसे उठाएंगे? यह फिकर कई वर्षों तक मुझे अन्दर ही अन्दर खाए जाता रहा। सचमुच देव समाज कंगाल हो गई महसूस होती रही। गुरू मिशन की कुर्बान गाह पर कुर्बान होने वाला और कौन आएगा? उस समय का लगा यह दुख का रोग - आजतक अन्दर खाता रहता है, रोता हूं, दिवारों से टक्करें मारने को दिल करता है, गुरू के मिशन के चमन को उजड़ते देख देख, पर कोई पेश नहीं चल सकी। गुरू के नाम लेने वालों के चरणों की धूल को मानवता सदा सदा के लिए मात्थे पर लगाने के लिए तरसती रहेगी।

बलदेव सिंह

मात - पिता संतान दिवस 2018

माता - पिता के प्यार को दरशाता हुआ एक कार्यक्रम 7 - 1 - 2018 को सेकटर 10 में स्थित आर्ट एण्ड म्योजियम गैलरी में डा० खेड़ा कोचिंग सेंटर चण्डीगढ़ द्वारा आयोजित किया गया। यह आयोजन हर साल बड़े उत्साह और प्यार भाव से आयोजित किया जाता है। इस कार्यक्रम में सभी छात्र अपने प्रियजनों के साथ सम्मिलित हुए। कोंचिग सेंटर के छात्रों ने अमूल्य गीत व एकांकी प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम के आरभ में छात्रों ने श्री गुरूदेव भगवान को संबोधित करते हुए एक भावात्मक सामूहिक गीत प्रस्तुत किया जिसके बोल थे "श्री गुरूदेव भगवन हम पर भी दया करना।" इसके पश्चात छात्रों ने अपने माता - पिता को फूल मालायों से सम्मानित किया। इस भावुक क्षण को देख वहाँ उपस्थित अधिकतर की आँखे नम हो गई। एक एकांकी "पापा द सुपरहीरो" प्रस्तुत की गई जिसमें पिता और बेटी के सुन्दर रिश्ते को दरशाया गया। मधुर सामूहिक गीत जिसके बोल "मात - पिता का प्यार अनोखा" के द्वारा छात्रों ने दरशाया के जो प्यार और स्नेह बच्चों पर उनके माता - पिता न्यौछावर करते है वो अमूल्य होता है। उसे दुनिया में कहीं से भी खरीदा नहीं जा सकता।

इसके पश्चात एकांकी "बेटे की ख्वाहिशों" में छोत्रों ने गंभीरता से दरशाया कि किस प्रकार पिता अपने बच्चो की हर आकांक्षा पूरी करने के लिए अपनी पूरी जान लगा देते हैं। फिर एक समूह गीत जिसके बोल थे "मेरे पापा" में बच्चों ने अपने पिता के प्रति प्यार को बहुत ही सुन्दरता से सुनाया। कार्यक्रम के अगले भाग में माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने प्रति - भागियों का धन्यवाद करते हुए बताया कि आजकल की संतान अपने माता पिता के साथ सिर्फ अपने स्वार्थ से जुड़े हैं। जब तक वे उनपर निर्भर होते है तब तक उनकी सुनते हैं, परन्तु जैसे ही वह आत्मनिर्भर हो जाते हैं तो उनके

संबंधों में ढीलापन व कठोरता आ जाती है। उन्होंने बताया कि बच्चों को सम्मान और श्रद्धा से अपने माता - पिता से जुड़ना चाहिए।

इसके पश्चात एक बहुत ही सुन्दर एकांकी "नन्हा दिल" दरशाया गया। इसके माध्यम से यह बताया गया कि कई बार माता - पिता अंजाने में अपने बच्चो में भेदभाव करते हैं। वह उस बच्चे को ज्यादा प्यार करते हैं जो उनकी हर बात माने लेकिन दूसरे बच्चे की पसंद नापसंद को नज़र अंदाज करते रहते है। लेकिन वक्त आने पर कई बार वही संतान जिसे हम खोटा सिक्का समझते हैं हमारे काम आता है। इसलिए माता - पिता को भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बच्चों का दिल मासूम होता है और बचपन में हीन्नता की भावना उनके हौसले के लिए घातक हो सकती है।

इसके बाद डा० खेड़ा कोचिंग सेंटर के निर्देशक ने मुख्य अतिथि, अपने अध्यापकों व अन्य उपस्थित लोगो का अभिनन्दन करते हुए अपने जीवन के यादगार पलों को सांझा किया। उन्होंने छात्रों से मन लगा कर पढ़ने को कहा और उन्हें यह हमेशा याद रखने को कहा कि वे अपने माता - पिता की पूंजी को व्यर्थ न जाने दें। उसके बाद माँ को समर्पित एक कविता व एक बेहतरीन गीत जिसके बोल "माँ प्यारी माँ" ये प्रस्तुत हुए। अगले अंक में डा० के० ऐस० आर्य द्वारा प्रतिभागियों को स्मृति चिन्ह बंटवाए गए। कोचिंग सेंटर के मेधावी छात्रो को डा० खेड़ा व डा० व० ऐस भाटिया ने पुरस्कार दे उनका हौसला बढ़ाया। कार्यक्रम के अंतिम भाग में एक सामूहिक गीत अध्यापकों व छात्रों के द्वारा पेश किया गया था जो कि अति शिक्षा प्रद जो देव समाज में भगवान देवात्मा द्वारा रचित था। माता - पिता की ओर से उसके बोल थे "हे प्यारी संतान हमारी, सदा तुम्हारा हो कल्याण" थे और बच्चो की ओर से "श्रद्धा - भाजन मात - पिता जी, श्रद्धा - भाव करूं उपहार" थे। इस बहुमूल्य गीत के साथ ही कार्यक्रम पर वीराम लगाया गया।

एक हाजरीन

माँ तो माँ होती है

पिछले दिनों समाचार पत्र में दो तस्वीरें देखी। बहुत सर्दी के दिन एक कुतिया अपने 5 - 6 बच्चों समेत बैठी थी। वहां मैदान में खेलने आए एक नवयुवक ने अपना कंबल ज़मीन पर रख दिया, वह नन्हें पिल्ले सारे के सारे धीरे धीरे उस कम्बल में घुस गए और मां उनके पास थोड़ी दूर पर बैठी रही, चाहती तो वह पिल्लों को धकेल कर कम्बल में घुस सकती थी, परन्तु उस माँ ने ऐसा नहीं किया। मां का दिल देखो, चाहे मनुष्य हो या पशु, मां तो मां होती है।

एक और तस्वीर में एक शेरनी एक हिरण के बच्चे की सुरक्षा कर रही है। उस पर और जानवरों ने हमला किया परन्तु उसने उनका मुकाबला किया ओर फिर खड़ी होकर अपने नीचे उस नन्हें हिरण के बच्चे को छुपा लिया। मां तो मां होती है। शेरनी की ममता ने उस बच्चे को बचा लिया। मां की ममता का किसी प्यार से मुकाबला नहीं हो सकता।

सुनजीत बराड़

अंग्रेजी में एक नई शानदार पुस्तक

हमारे पाठक गण यह जानकर पाक खुशी और विशेष उत्साह अनुभव करेंगे कि हमारे वरिष्ट धर्म सम्बन्धी श्रीमान सुखदेव सिंह जी इंगलैंड ने अंग्रेजी में एक नई पुस्तक लिखी है, जो 600 सफों से भी अधिक सफों से सुशोभित है। इस प्रस्तक में गुरूमहाराज के कारज, शिक्षा और जीवन के ऊपर बहुत प्रभावदायक रोशनी पाई है। इस पक्ष में श्रीमान जी हमारी बहुत और बार बार दिली मुबारक के पात्र हैं। यह पुस्तक कई वर्षों की कठोर तपस्या और साधनों, विशेषकर विदेशी जनों के सहयोग का परिणाम है। इस पुस्तक से पाठकों, विशेष कर विदेशी जनों को "देव जीवन" की अद्वितीय प्रतिभा और महिमा पर चिन्तन वा मनन करने का अवसर मिलेगा। पाठकों के लिए यह पुस्तक एक शुभकर और पवित्र निमन्त्रण है।

यह पुस्तक चार भागों में बंटी हुई है। प्रत्येक भाग के और कई उप-भाग हैं। जिनसे पाठकों को और अधिक लाभ मिल सकता है। पहला भाग "देव यात्रा" समय से परे, या वक्त से अनछूई, के नाम से दरज है। इसमें दर्शाया गया है कि धर्म केवल मनुष्य के आत्मा वा स्वभाव से सम्बन्धित है। इसके स्वास्थ्य और सुख मूलक स्वार्थ और आत्मिक रोगों के ज्ञान, बोधों और विवेक के साथ इसका अकाट्य सम्बन्ध है। यह भाग काफी विचारयोग और अचम्भित करने वाली सचाईयों के साथ भरपूर है।

दूसरे भाग में "सचाई और भलाई" के रचनात्मिक पक्ष दर्ज हैं।

तीसरे भाग में "फिलासफी" है, यह ब्रह्मांड (नेचर) के स्वभाव के विषय में देवात्मा की रोशनी से भरपूर है।

चौथे भाग में देव जीवन और अन्य जातियों प्रजातियों की जिन्दगी, जीवन निर्वाह की सम्भावना दर्शाई गई है। यह एक कविता-मयी धारा है जो देवात्मा जी के घोर दुख, विषाद, अवहेलना, तड़पन और महा कुर्बानी और महा त्याग को दर्शाती है।

इस पुस्तक का नाम Highest Meaning of life अर्थात जीवन के सर्वोत्म अर्थ है। इसके वास्तविक अन्दरूनी भाव को समझने के लिए मनुष्य के मन में दृड़, अटूट विश्वास, अक्षय संयम, चिर स्थाई उत्साह और स्थिर संकल्प की आवश्यकता है। क्योंकि नेचर में विकास और विनाश क्रम के नियम के लिए भी चिर स्थाई परिश्रम, श्रद्धा और समर्पण का होना अति आवश्यक है, जिसका अद्वितीय फल, देवरूप या सत्य, शिव, सुन्दरता का अनूठा संगम है।

इस पुस्तक में रमन प्रीत कौर जो सुखदेव जी की उच्च शिक्षा प्राप्त पत्नी है उसने बहुत भारत में रहते हुए भी बहुत सहयोग वा सहायता की है।

पाठक गण इस पुस्तक की गरिमा अधिक से अधिक लाभ उठाने और उच्च शिक्षा वर्ग को इस पुस्तक को अधिक से अधिक उन तक पहुँचाने का संग्राम करें। इसके निरतंर बार बार पाठ द्वारा सब का शुभ हो।

शुभ कामना और धन्यवाद सहित

मन्त्री

शुभ संग्राम

मोगा में एक सभा

मोगा में श्रीमान अवतार सिंह जी बराड़ और श्रीमति भरपूर कौर जी के घर 12 जनवरी 2018 को सभा रखी गई। जिसमें उनके माता जी, भाई, रिश्तेदार, पड़ोसी आदि शामिल हुए। तलवंडी साबो से श्रीमान बलबहादुर सिंह जी सभा कराने के लिए पधारे। सभा 12 बजे से 2 बजे तक चली। संगरूर से गोनी जी भी पहुँच गए। एक भजन के बाद सभापति जी ने परम पूजनीय भगवान देवात्मा की सच्ची धर्म शिक्षा और उनके देव प्रभावों की महिमा का बहुत स्पष्टता से वर्णन किया। कहलाने वाले धर्म साधनों से बिल्कुल भिन्न धर्म साधन और सच्चा धर्म साधन प्रदान करती है। जिस में कोई न कोई मिथ्या या पाप की असल घृणित तस्वीर सामने आती है या उच्च भावों की महिमा अनुभव होती है। सभापति जी ने बताया कि सम्बन्धों में उच्च गतियां करना ही सच्चा धर्म, सच्चा साधन है। कई उच्च परिवर्तनों और अपने स्वंय के अनुभव ब्यान करते हुए श्रद्धा भाव से देव धर्म के स्वर्गीय मण्डल का ब्यान किया। सन्मान भाव, शुक्रगुज़ारी, हमदर्दी के भावों से सम्बन्ध स्वर्गीय बनते हैं। सच्चे दिल से क्षमा के भावों से सम्बन्ध स्वर्गीय बनते हैं। सच्चे दिल से क्षमा मांगना और क्षमा करना सब मुश्किलों, दुखों, उलझनों की चाबी है। परन्तु यह सब मनुष्य के अपने वश में नहीं। देव प्रभावों के उचित मात्रा में मिलने पर ही इन भावों की उत्पत्ति और विकास सम्भव होता है। हर मनुष्य को देव प्रभावों की सारी वस्तुओं से अधिक प्राप्त करने की अत्यन्त आवश्यकता है। नहीं तो जो पापों का सैलाब मानवता में आया हुआ है, वह बढ़ता ही जाएगा और दिन पर दिन और जनों को भी अपनी लपेट में ले लेगा।

सभापति जी के ब्यान के बाद बीबी भरपूर कौर जी ने बताया कि देव समाज में आने से पहले हमारा जीवन बहुत दुखों से भरपूर था। हमारे एक बच्चे की जान भी नहीं बच सकी थी। इस पाक पावन संगत ने हमारे घर में दुखों और पापों के स्थान पर एक दूसरे के लिए शुभ बृतावों का नया अध्याय खोल दिया है। मेरे धर्मपति मेरा बहुत सन्मान करते हैं, ख़्याल रखते हैं। सब हाजरीन ऐसे सत्संग की महिमा महसूस करते नज़र आ रहे थे।

सभा के बाद बीबी भरपूर जी ने बताया कि किस तरह इस शिक्षा के आधार पर मैंने उज्जड़ रहे एक पति पत्नी का घर बसाया उन्होंने बताया मैं 2 महीने अपना काम छोड़कर उस लड़की को घर में रखा, उसके 2 बच्चों को सम्भाला, जिसके बाद वह अपने पति को फोन करने पर राजी हुई। फिर धीरे धीरे उनका सम्बन्ध बेहतर हो गया और उजड़ता हुआ घर बस गया, जिसकी उन्हें असीम खुशी प्राप्त हुई। गुरू महाराज के प्रभावों ने एक उजड़े हुए परिवार को ही नहीं बचाया, एक स्त्री को दूसरों के घर बसाने वाली बना दिया।

उसके बाद बीबी भरपूर कौर जी ने सब आए जनों के लिए बहुत अच्छे खाने का प्रबन्ध किया हुआ था। देव धर्म मिशन के लिए 2 हज़ार रूपये दान भी दिए।

मल्लेका (सिरसा)

शुभ संग्राम 16 - 1 - 2018 से 18 - 1 - 2018 तक

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी 16 जनवरी को मल्लेका पहुंचे। 16 - 1 - 2018 सायं 7:30 बजे सभा का प्रारम्भ हुआ, जिसमें केसूपुर से भी लगभग सभी धर्म सम्बन्धी पहुंचे हुऐ थे। इस सभा में सभापति जी ने बताया कि मनुष्य के अस्तित्व में सबसे बहुमूल्य उसकी अपनी आत्मा या जीवनी शक्ति है। अपितु विडम्बना ये है कि बड़े - बड़े प्रोफैसर, डाक्टर एवं उच्च धर्म संस्थाओं के मुखी घोर पापमूलक कर्म करने को विवश हो जाते हैं। राजकोट के एक प्रोफैसर, करनूल हैदराबाद की एक डाक्टर एवं अमृतसर की एक ध ार्मिक संस्था के मुखी की ठोस उदाहरणों से इस अंध कार को स्पष्टता से प्रस्तुत किया। सभापति जी ने अपने और उपस्थित धर्म सम्बन्धियों का सौभाग्य अनुभव किया कि हमें ऐसी आत्मिक रोशनी के भण्डार परम - पूजनीय भगवान देव आत्मा का दर प्राप्त हो गया है। हमारी अपनी - अपनी योग्यतानुसार हमारे परिचालक भावों का हमारे अधिकार की सीमानुसार ज्ञान हो गया है, और हो रहा है, किसी किसी भाव से किसी सीमा तक सौभाग्यवान जनों को सच्ची मुक्ति भी मिली है। सभापति जी ने श्रीमान नौध सिंह जी, और कई और उच्च परिवर्तनों का वर्णन करके देव - ज्योति और देव - तेज की महिमा का श्रद्धा भावना से वर्णन किया।

17 - 1 - 2018, सुबह 9:00 बजे। इस सभा में केसुपुर से प्रिंसीपल सरताज सिंह जी के स्कूल के सीनीयर कक्षाओं के कई विद्यार्थी अध्यापक और कई कर्मचारी भी उपस्थित हुए। इस सभा में बताया गया कि सम्मान भाव उच्च विकास की सबसे कामयाब चाबी है। इस भाव से ही सच्चा आज्ञा - पालन होता हे। इस भाव से दूसरों की महानता एवं उच्चपन नज़र आता है। श्रदेय श्रीमान पी०वी०कनल जी की मिसाल द्वारा बताया गया कि उनके महान् लेखक बनने के पीछे यही सम्मान का भाव था, उन्होंने श्रीमान् भाई मोहन सिंह जी के कहने पर एक लेख का कई बार तरजमा किया था। भाई लहणा जी इस भाव द्वारा गुरू अंगद देव जी बन गऐ थे। इस भाव को उत्पन्न करने हेतु यह आवश्यक है कि साधक को दूसरों के जीवन का सौन्दर्य नज़र आए, एवं झुकने पर मजबूर करे। यह भाव दूसरों के गुणों को अपने अन्दर उत्पन्न करने का सामर्थ्य प्रदान करता है। श्रद्धावान ही सच्चा ज्ञान एवं धर्म प्राप्त कर सकता है। श्रद्धेय काका जी बाल्यावस्था में अपने पिता के नज़दीक खेल रहे थे और परम - पूजनीय भगवान् ने पूछा कि पढ़कर क्या बनोगे? उनके स्थान पर उनके पिता ने कहा, महाराज! ये आपके मिशन का लेखक बनेगा। श्रद्धावान् बेटे ने पिता के वचन को अपनी समस्त शक्ति द्वारा सार्थक कर दिया। सभापति जी ने अन्य परिवारिक जीवनों में से इस भाव के सुन्दर और विकासकारी दृश्य पेश किए, इनका हृदय कई बार भर आता था। उपस्थित जन भी लाभ उठाते नज़र आ रहे थे।

17 - 1 - 2018, रात्रि 7:30 बजे। इस सभा में भी धर्म सम्बन्धी 6 - 7 कारों के अतिरिक्त अपने अपने मोटर साईकिलों द्वारा पहुँचे। सभा से पहले ही भव्य मंडल बनता नज़र आ रहा था। सभापति जी ने

बताया कि सारे विश्व में विश्व के नियम काम करते हैं। फिर कई जनों को प्रश्न किया कि बताओ नियम क्या होता है? फिर स्वंय यह ब्यां किया कि विश्व के अन्दर जो परिवर्तन जिस अटल विधि द्वारा उत्पन्न होता है, उस विधि को "नेचर" का नियम कहते हैं। विश्व के समस्त जगतों के सारे अस्तित्व इन नियमों के अधीन हैं। इन नियमों के विरुद्ध कोई घटना या परिवर्तन सम्भव नहीं।

सच्चे धर्म का कार्य आत्मा के उच्च परिवर्तन पैदा करने का कार्य है, शक्ति बिना कोई गति नहीं हो सकती। देव आत्मा परम पूजनीय भगवान देव - आत्मा की देव शक्तियां स्वर्गीय परिवर्तन पैदा करती हैं। इन शक्तियों ने बड़े - 2 पापी जीवन बदलकर धर्मी बनाएं हैं। सभापति जी ने यह भी समझाने का यत्न किया कि यह विश्व सदैव से है, और सदा रहेगा क्योंकि इसमें मौजूद पदार्थ और शक्ति का कुल जोड़ (Sum total) स्थिर रहता है। इसको घटाया या बढ़ाया नहीं जा सकता, इसलिऐ विश्व अनादि है। पूजनीय भगवान् की शिक्षा विश्व के नियमों एवं सत्य घटनाओं पर आधारित है और इसीलिए विज्ञानमूलक है। मनुष्य का भला और बुरा भी नियमों पर ही निर्भर करता है। जन्मजात विरासत और उच्च वातावरण मनुष्य के विकास के मूलत: नियम हैं। उदाहरणों द्वारा इन दोनों का सुन्दर वर्णन किया।

<u>18 - 1 - 18, सुबह 9:00 बजे।</u> इस सभा में भी सारे धर्म सम्बन्धी अपनी कारों, मोटरसाईकलों एवं स्कूल वैन द्वारा पहुंचे। इस सभा में बताया गया कि उच्च जीवन ही धर्म का जीवन है। उच्च भावों के बिना कोई धर्मवान नहीं बन सकता। हमदर्दी का भाव दूसरों के प्रति मनुष्य को केन्द्रित करता है। इसके द्वारा मनुष्य औरों (दूसरों) के दु:खों में स्वयं दु:खी होने लगता है। हज़रत ईसा मसीह, अब्राहम लिंकन और महात्मा बुद्ध के जीवनों में से घटनाओं द्वारा इस भाव का महत्व ब्यां किया। हम हर स्थान पर इस भाव द्वारा उच्च - व्यवहार कर सकते हैं। इसके साथ उपकारियों की बहुत विशालतम दुनिया शुक्रगुज़ारी के बग़ैर छुपी रहती है। परम् पूजनीय भगवान् के देव - प्रभाव अधिकारी आत्माओं को शुक्रगुज़ार बनाते हैं। <u>माता - पिता, अध्यापक, डाक्टर, एवं और उपकारी बहुत प्यारे महसूस होने लगते हैं</u>, उनकी सेवा करके कुछ ऋण उतारने की प्रेरणा यही भाव उत्पन्न करता है। सत्गुरू देव - आत्मा ने बेटों को, पतियों को, मरीज़ों को शुक्रगुज़ार बनाया है। श्रीमान मदन मोहन जी दिल्ली, श्रीमान नौध सिंह जी अनूपगढ़, श्रीमान गुरबख़्श सिंह जी कर्मचारी देव समाज जैसे शुकरगुज़ारों की घटनाओं द्वारा इस भाव का महत्व को बहुत प्रभावशाली शब्दों में बताया। सभा के अन्त में 600 रूपये दान में प्राप्त हुए।

एक हाजरीन

सत्संग

1) **सिरसा, मल्लेकां - 12 मार्च से 15 मार्च 2018**
2) **गंगानगर - 15 मार्च से 17 मार्च 2018 तक**
3) **पदमपुर - 17 मार्च 2018 से**

देव समाज के सम्बन्ध में विशेष सभा

11 फरवरी ईतवार के दिन देव समाज उत्सव के उपलक्ष्य में चण्डीगढ़ में विशेष सभा रखी गई। इसके लिए धर्म सम्बन्धियों को फोन द्वारा सूचित कर दिया गया था। इस सभा में यहां के प्राय: सभी सेवक उपस्थित थे।

9:30 बजे 3154 - 21 डी, के साधानालय में महिमा सम्बन्धी भजन का गान श्रीमान जगदीश जी ने किया। देव स्तोत्र का गान और भाव पूर्ण व्याख्या की गई। फिर सुरजीत जी ने, "देव समाज के संग हमारा, जीवन का सम्बन्ध है भारी" नामक भजन का गान किया।

इसके बाद सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने देव समाज की महिमा का वर्णन शुरू किया, देव समाज के बिना न देवात्मा और न उनके प्रभावों तक पहुँचना मुमकिन है। किस तरह आरम्भिक काल में श्रीमान देवत्व सिंह जी और श्रद्धेय जी जैसों ने जंगली इलाकों में पैदल अपने समान उठा उठाकर जाकर और आत्माओं तक देव समाज और देवात्मा का पता दिया, उनकी घोर कठिनाईयों और त्याग, भूखे प्यासे रहना और रोगी होकर जो कुर्बानियां की है, उनको ब्यान किया। उन मेहरबानों को सदैव याद रखने और धन्यवाद देते रहने की प्रेरणा की। देव समाज के कारज का ब्यान करने से पहले सुरजीत जी ने, "ऐ नेकों की सोसाईटी, आदर्श तू समाज है" नामक भजन का वर्णन किया। फिर सभापति जी ने समाज से मिलने वाली बरकतों का चित्रण, जगदीश जी, चमन जी और जलधर जी (बिहार) उपस्थित जनों के जीवन में मिली बरकतों का वर्णन करके समाज की महिमा का वर्णन किया। इसके बाद पूजनीय देव शास्त्र से कुछ आदेशों का पाठ किया और बताया कि हमें देव समाज के शरीर का अपने आपको तुच्छ अंग अनुभव करना चाहिए और हर एक को हमेशा देव समाज के लिए एक वा दूसरे पक्ष में सेवाकारी होकर अपना अपना भला करना चाहिए सभापति जी ने देव समाज के पुराने और बाद में नये विजय पताका के सत्कार और उसके सम्बन्ध में भजन का ज़िकर किया। इसके बाद देव आरती का गान करके सभा सम्पन्न हुई।

बाद में सब हाजरीन को श्रीमति सुरजीत बराड़ ने स्वादिष्ट खीर खिलाकर सम्मलित भोज का साधन किया। सब हृदय देव समाज की स्थापना की पावन याद और गर्व को महसूस करके धन्य धन्य हो रहे थे इस अवसर पर 400 रूपये नकद भेंट फंड प्राप्त हुआ। विजय पताका का अर्चन किया गया।

श्री अकबरपुर समाधि फंड

इसी पावन अवसर पर सब धर्म सम्बन्धियों की सहमति से श्री अकबरपुर समाधि फंड खोले जाने का फैसला किया गया।

देव धर्म कौंसल ने उस सभा के बाद इस सम्बन्ध में अकाऊंट खोले जाने का प्रस्ताव पारित किया। श्रीमान बलदेव सिंह जी और उन के परिवार की तरफ से एक लाख के चैक के साथ यह अकाऊंट खोलने का निश्चय किया। वह चैक दे दिया गया।

मन्त्री

वक्त के सबसे पाबंद इंसान

महात्मा गांधी के पास यों तो बहुत सारी चीज़ें नहीं होती थीं, लेकिन उनमें भी उन्हें अपनी घड़ी सबसे अधिक प्रिय थी। चाहे जो हो जाए, वो घड़ी हमेशा उनके पास रहती। गांधी सुबह चार बजे उठ जाते थे और उठते ही वे सबसे पहले घड़ी उठाकर समय देखते थे। ठीक ऐसा ही वे आधी रात को सोने जाने से ठीक पहले करते थे। दिन में भी वे बारम्बार घड़ी देखते रहते थे, ताकि कहीं पहुंचने में देरी न हो जाए। क्या ही अचरज की बात है कि जीवन के अंतिम क्षणों में जब गोलियां उनकी 78 बरस की देह को छेद गईं और वे धरती पर गिर पड़े, तो उनकी घड़ी भी उसी क्षण रुक गई।

महात्मा गांधी के पास एक इंगरसॉल जेबघड़ी हुआ करती थी, उनकी मिल्कियत की गिनी-चुनी चीज़ों में से एक। लेकिन चूंकि उनके पास घड़ी रखने के लिए कोई जेब नहीं थी, इसलिए वे उसे अपनी धोती पर सेफ्टीपिन से बांधकर रखते थे। यह इंगरसॉल घड़ी नई दिल्ली के राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय में एक छोटे-से कांचघर में सहेजकर रखी गई है। इसके साथ ही उनकी रक्तरंजित धोती और शॉल भी वहां प्रदर्शित है। ये तीनों चीज़ें मिलकर काल का एक रूपक रचती हैं, जो हिंदू पौराणिकता में समय का भी देवता है और मृत्यु का भी।

गांधी वक्त के बहुत पाबंद थे। वास्तव में उनके सामने कोई चारा भी नहीं था, क्योंकि काम ही इतने थे। अगर गांधी वक्त के पाबंद नहीं होते तो हर रोज़ दर्जनों पत्रों का उत्तर लिखने और बीसियों लोगों से मिलने-जुलने के अलावा रोजमर्रा के दूसरे असंख्य काम नहीं कर पाते। लेकिन गांधी जी की समयनिष्ठा का एक नैतिक महत्व भी था। एक मायने में समय के प्रति गांधी की यह दृष्टि उनके ट्रस्टीशिप के सिद्धांत के अनुरूप थी, जिसके अनुसार हम अपनी संपत्तियों के स्वामी नहीं होते, बल्कि उनके न्यासी होते हैं, और इसीलिए हमें उनका यथेष्ट उपयोग करना चाहिए। यही बात समय पर भी लागू होती है, क्योंकि हम अपने समय के मालिक नहीं होते हैं। गांधी ने कहा था कि अन्न का एक कण और समय का एक क्षण, दोनों ही व्यर्थ नहीं जाना चाहिए, क्योंकि इन पर हमारा नहीं राष्ट्र का अधिकार है, हम केवल उनके न्यासी हैं।

ऐसा लगता है कि अंग्रेजों को भी गांधी की इस घड़ी के बारे में मालूम था। जनवरी 1932 में जब गांधी ने फिर से सविनय अवज्ञा आंदोलन छेड़ा तो बम्बई के पुलिस आयुक्त तड़के तीन बजे उन्हें गिरफ्तार करने आ धमके। गांधी तब सो रहे थे। उन्होंने आधी नींद में ही सुना कि पुलिस आयुक्त महाशय कह रहे हैं कि आपको तैयार होने के लिए आधा घंटे का समय दिया जाता है। यह सुनते ही गांधी ने फ़ौरन तकिए के नीचे हाथ घुमाया और घड़ी निकालकर समय देखा। पुलिस आयुक्त महाशय बोले, ओह, तो यही है वह मशहूर घड़ी। इसके बाद दोनों ठहाका लगाकर हंस पड़े। उस दिन गांधी का मौनव्रत था, इसलिए उन्होंने पेंसिल उठाई और एक परची पर लिखकर दिया। इस गिरफ्तारी से चंद रोज पहले ही गांधी ने स्कॉटलैंड यार्ड के सर्जेंट्स को भेंटस्वरूप दो घड़ियां भिजवाई थीं। इन सर्जेंट्स ने 1931 की गोलमेज कांफ्रेंस के दौरान लंदन में गांधी की देखभाल की थी। गांधी ने बहुत सोच-विचार करने के बाद ही भेंट के रूप में घड़ी देने का निर्णय लिया था। गांधी के साथ ही सुबह जल्दी उठने वाले

Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

और दिनभर उनके साथ यात्राएं करने वाले सर्जेंट्स को भलीभांति मालूम था कि गांधी कितने समयनिष्ठ थे। ऐसे में घड़ी भेंट करने का अपना महत्व था। इतना ही नहीं, गांधी ने सरलता से उपलब्ध स्विस घड़ियों के बजाए इंग्लैंड में निर्मित घड़ियां भेंट की थीं, ताकि यह संदेश प्रेषित कर सकें कि वे भले ही विदेशी कपड़ों की होली जलाते हों, लेकिन उनके मन में अंग्रेजी वस्तुओं के प्रति कोई दुर्भावना नहीं है।

ब्रिटिश राज की जेलों में एक राजनीतिक क़ैदी के रूप में गांधी औसतन रोज पचास पृष्ठ से अधिक लेखन करते थे, फिर चाहे उनके अंगूठे ही क्यों न दुखने लगें। किंतु इसके साथ ही चरखा भी चलाते थे, गीता का पाठ करते थे, उर्दू सीखते थे, भोजन पकाते थे और खुगोलविद्या के बारे में जानकारियां जुटाते रहते थे, जिसके प्रति उनके मन में गहरा रूझान था। महात्मा के सचिव महादेव देसाई उनके समय-प्रबंध पर हैरत में पड़ जाते थे। गांधी जी की तेजगाम चाल की ही तरह उनका लेखन भी त्वरित गति से संपन्न होता था, लेकिन उनके पत्रों में आत्मीयता के साथ ही यह चिंता भी निरंतर झलकती थी कि जिस व्यक्ति को वे पत्र लिख रहे हैं, वह अपने समय का समुचित उपयोग कर रहा है या नहीं। मसलन, वे बहुधा पूछ बैठते कि तुम सुबह कितने बजे सोकर उठते हो। लंबा पत्र लिख जाने पर वे मानो आत्मग्लानि से भरकर बोल उठते, बस आज मैं तुम्हें इससे अधिक समय नहीं दे सकता। जब वे जेल में नहीं होते थे, तो उनके पास बहुत ही कम समय होता था। ऐसे में जाहिर है, उनके पत्र भी छोटे हो जाते थे। शिक़ायत करने वालों को वे संक्षिप्त उत्तर लिखते-इस समय मुझसे उत्तर की अपेक्षा मत करो, लेकिन तुम पहले की तरह नियमित पत्र भेजते रहो। इंगरसॉल के अलावा गांधी एक और घड़ी हमेशा अपने साथ रखते थे। यह एक स्विस ज़ेनिथ थी, जो उन्हें इंदिरा गांधी ने तब भेंट की थी, जब इंदिरा अभी बालिका ही थीं। गांधी जी को उस घड़ी की दो बाते बहुत पसंद थीं। एक तो यह कि उसमें अलार्म बजता था और दूसरी यह कि उसका डायल रेडियम का था, जिससे रात के अंधेरे में भी समय देखा जा सकता था। मई 1947 में जब एक रेलवे स्टेशन से वह घड़ी चोरी हो गई तो गांधी इससे इतने मायूस हो गए थे कि उन्होंने अपने अख़बार हरिजन में घड़ी लौटाने की अपील प्रकाशित करवाई। चोर भी ईमानदार था। उसने अगले ही दिन वह घड़ी डाक से भिजवान दी।

(दैनिक भास्कर से संभार)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts